मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय (धर्मवीर भारती)

पाठ का सारांश

1989 में लेखक को मृत्यु तुल्य कष्ट–लेखक को जुलाई, 1989 में तीन-तीन हार्ट-अटैक पड़े थे। कई डॉक्टरों ने कह दिया था कि वे अब नहीं बचेंगे, परंतु डॉक्टर बोर्जेस ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने लेखक को 900 वॉल्ट्स के शॉक्स दिए। यदि कहीं भी एक कण प्राण शेष होंगे, तो हार्ट रिवाइव (पुनर्जीवित) करने की आशा बँधी हुई थी। 900 वॉल्ट्स के शॉक्स देने के पश्चात्, प्राण तो लौट आए, पर इस प्रयोग से 60% हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। शेष 40% में भी रुकावट थी। अतः ओपन हार्ट ऑपरेशन की आवश्यकता बताई गई, लेकिन अभी उन्हें कुछ दिन आराम करने को कहा गया। लेखक को अद्‌र्ध-मृत्यु वाली स्थिति मे घर लाया गया।

किताबों वाले कमरे में रहने की व्यवस्था–अस्पताल से घर लाकर लेखक को उसकी इच्छानुसार किताबों वाले कमरे में रखा गया। चलना, बोलना, पढ़ना सब मना था। दिन भर पड़े-पड़े वह दो ही चीजें देखता रहता था, खिड़की के सामने हवा में झूलते सुपारी के झालदार पत्ते और अलमारियों में लगी हजारों किताबें, जो उसने पिछले चालीस-पचास वर्षों में जमा की थीं।

लेखक की पारिवारिक स्थिति–उस समय आर्य समाज का सुधारवादी आंदोलन जोर पर था। लेखक के पिता आर्य समाज रानीमंडी के प्रधान थे। माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी। पिता की अच्छी खासी नौकरी थी, जिसमें उन्होंने खूब धन कमाया था, लेकिन लेखक के जन्म से पहले ही उन्होंने गांधीजी के आह्वान पर नौकरी छोड़ दी। परिवार आर्थिक संकटों से घिर गया। ऐसे समय में भी घर में नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। ये पत्रिकाएँ थीं–'आर्यमित्र साप्ताहिक', 'वेदादेम', 'सरस्वती', 'गृहिणी' तथा दो बाल पत्रिकाएँ 'बाल सखा' और 'चमचम'। इनके कारण लेखक को बचपन से ही पढ़ने की आदत लग गई थी।

लेखक की प्रिय पुस्तक और उसका प्रभाव–लेखक के घर में 'सत्यार्थ प्रकाश' भी था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्याय पूर्ण रूप से लेखक की समझ नहीं आते थे, परंतु उन्हें पढ़ने में मज़ा आता था। लेखक की प्रिय पुस्तक थी–स्वामी दयानंद की जीवनी। इसमें स्वामी दयानंद के जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन था। स्वामी दयानंद अदम्य साहस वाले अद्‌भुत व्यक्ति थे। उनके जीवन की घटनाएँ मुझे (लेखक) काफ़ी प्रभावित करती थी। जैसे–चूहे को भगवान का भोग खाते देखकर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, तीर्थों, जंगलों, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना, भगवान की तलाश करना आदि। ऐसे मूल्य जो समाज विरोधी हैं या मनुष्य विरोधी हैं, उनका खंडन करना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लेखक को काफ़ी प्रभावित करता था। अंत में हारे हुए को क्षमा करना और उसे सहारा देना लेखक के बाल मन को बहुत प्रभावित करता था।

लेखक की प्रारंभिक शिक्षा–लेखक की माँ स्कूली पढ़ाई पर ज़ोर देती थीं। उन्हें चिंता रहती थी कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता, अतः फेल न हो जाए। लेखक को शुरू में घर पर ही पढ़ाया गया तथा वह बुरे संस्कार ग्रहण न कर लें इसलिए कक्षा दो तक की पढ़ाई लेखक ने घर पर ही की थी। लेखक को स्कूल में तीसरी कक्षा में भर्ती कराया गया। उस दिन शाम को पिता जी उसे घुमाने ले गए और लोकनाथ की दुकान पर ताज़ा अनार का शरबत पिलाया। उन्होंने लेखक से पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ने का वायदा ले लिया। लेखक अच्छे नंबरों से पास होता चला गया। पाँचवीं कक्षा में वह फर्स्ट आया तथा अंग्रेज़ी में सबसे अधिक नंबर लाने पर उसे अंग्रेज़ी की दो पुस्तकें इनाम में मिलीं। एक किताब में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों में भटकते हैं। इस किताब के कारण लेखक को पक्षियों की जातियों, बोलियों व उनकी आदतों के विषय में काफ़ी जानकारी मिलती है।

दूसरी किताब 'ट्रस्टी द रग' में पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। कौन-कौन-सा माल लादकर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की ज़िंदगी कैसी होती है, कैसे-कैसे द्वीप उन्हें मिलते हैं, कहाँ खेल होती है तथा कहाँ शार्क होती है, इन सभी बातों की जानकारी लेखक को इस पुस्तक को पढ़ने से मिली। इन किताबों ने लेखक के लिए एक नई दुनिया का दरवाज़ा खोल दिया।

निजी पुस्तकालय की शुरुआत–लेखक के पिता जी ने अलमारी का एक खाना खाली करके उसकी दोनों किताबें वहाँ रखते हुए उसके निजी पुस्तकालय की शुरूआत की और कहा–"आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।" इस प्रकार एक बच्चे की लाइब्रेरी प्रारंभ हुई और धीरे-धीरे इसका विस्तार होता गया।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केंद्रों में से एक रहा है। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक यहाँ पर है। विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा अनेक कॉलेज़ों की लाइब्रेरियाँ तो हैं ही, लगभग हर मोहल्ले में अलग-अलग लाइब्रेरी भी है। अपनी लाइब्रेरी कभी वैसी होगी, यह तो वह स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था। उसके अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी–'हरि भवन'। स्कूल की छुट्टी होते ही लेखक वहाँ पढ़ने चला जाता था। लेखक के पिता दिवंगत हो चुके थे, इसलिए लाइब्रेरी का चंदा चुकाने का पैसा नहीं था।

अतः वहीं बैठकर किताबें निकलवाकर पढ़ता रहता था। तभी से लेखक पर किताबें इकट्ठी करने की सनक चढ़ गई थी, परंतु पैसे के अभाव के कारण वह उस समय ऐसा न कर पाया। हरि भवन में ही लेखक का परिचय बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेश नंदिनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनंदमठ' से, टालस्टॉय की 'अन्ना करेनिना', विक्टर ह्यूगों का 'पेरिस का कुबड़ा', सर्वारी. ज का 'विचित्र वीर' आदि उपन्यासों से हुआ।

अपने पैसों से खरीदी गई पहली पुस्तक–पिता की मृत्यु के बाद तो आर्थिक संकट और भी बढ़ गया था। वह एक ट्रस्ट से सहायतार्थ मिले धन से सेकंड हैंड पाठ्य-पुस्तकें खरीदता था। एक बार इंटरमीडिएट पास करने पर पुरानी पाठ्य-पुस्तकें बेचकर बी०ए० की सेकंड हैंड पुस्तकें खरीदीं, तो दो रुपये बच गए। लेखक 'देवदास' फ़िल्म के एक गाने 'दुःख' के दिन अब बीतत नाहीं' को अकसर गुनगुनाता रहता था।

माँ ने धीरज बँधाते हुए समझाया कि "दिल इतना छोटा क्यों करते हो? दुःख के दिन बीत जाएँगे।" उन्होंने लेखक से पिक्चर देख आने को कहा, पर वह पिक्चर देखने के स्थान पर उन दो रुपयों से 'देवदास' नामक पुस्तक ही खरीद लाया। उसने दस आने में किताब खरीदकर शेष बचे पैसे माँ के हाथों पर रख दिए। यह देखकर माँ की आँखों में आँसू आ गए। यह उसकी अपने पैसों से खरीदी गई पहली पुस्तक थी।

निजी पुस्तकालय के प्रति लेखक की भावना–आज लेखक के पुस्तकों के संकलन में विभिन्न विषयों पर अनेक लेखकों की हज़ारों पुस्तकें हैं। इनके बीच लेखक स्वयं को भरा-भरा-सा महसूस करता है। लेखक का ऑपरेशन सफल होने के बाद उसे देखने आए मराठी के वरिष्ठ कवि विंदा करंदीकर ने सच कहा था। कि "भारती, ये सैकड़ों महापुरुष जो पुस्तक-रूप में तुम्हारे चारों ओर विराजमान हैं, इन्हीं के आशीर्वाद से तुम बचे हो। इन्होंने तुम्हें पुनर्जीवन दिया है।" लेखक ने मन-ही-मन सबको प्रणाम किया, विंदा को भी और उन महापुरुषों को भी।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : सन् 1989 में लेखक के साथ क्या घटना घटित हुई?

उत्तर : जुलाई, 1989 में लेखक को तीन-तीन हार्ट-अटैक पड़े थे। कई डॉक्टरों ने कह दिया था कि वे अब नहीं बचेंगे, परंतु डॉक्टर बोर्जेस ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने लेखक को 900 वॉल्ट्स के शॉक्स दिए। यदि कहीं भी एक कण प्राण शेष होंगे, तो हार्ट रिवाइव (पुनर्जीवित) करने की आशा बँधी हुई थी। 900 वॉल्ट्स के शॉक्स देने के पश्चात्, प्राण तो लौट आए, पर इस प्रयोग से 60% हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। शेष 40% में भी रुकावट थी। अतः ओपन हार्ट ऑपरेशन की आवश्यकता बताई गई, लेकिन अभी उन्हें कुछ दिन आराम करने को कहा गया। लेखक को अर्द्ध-मृत्यु वाली स्थिति में घर लाया गया।

प्रश्न 2 : लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?

उत्तर : लेखक को तीन-तीन जबरदस्त हार्ट-अटैक हो चुके थे। 900 वॉल्ट्स के शॉक्स से प्राण बचाने की कोशिश की गई थी। इस प्रयोग में 60 प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो चुका था। शेष बचे 40 प्रतिशत हार्ट में भी तीन अवरोध थे। ऐसे में ओपेन हार्ट ऑपरेशन करने में सर्जन हिचक रहे थे, क्योंकि यदि ऑपरेशन के बाद रिवाइव न हुआ तो जान जा सकती थी।

प्रश्न 3 : अस्पताल से लौटने के बाद भारती जी ने अपने किताबों के कमरे में ही रहने का निर्णय क्यों किया था? उनके इस निर्णय से आपको क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर : अस्पताल से लौटने के बाद भारती जी ने निश्चय किया कि वे अपने ड्राइंगरूम में नहीं रहेंगे अपितु किताबों वाले कमरे में रहेंगे। उन्होंने यह निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उन्हें पुस्तकों से असीम प्रेम था। पुस्तकों को देख-देख कर उन्हें गहरी तृप्ति मिलती थी, गहरा संतोष मिलता था। उन्हें याद आती थी कि कैसे वे बचपन में पुस्तकें पढ़ने के लिए तरसते थे। उन्हें अपनी एक-एक खरीदी हुई पुस्तक तथा इनाम में मिली हुई पुस्तक की याद आती थी। इस प्रकार पुस्तकालय उन्हें भरा-पूरा संसार जान पड़ता था।

भारती जी के इस निर्णय को पढ़कर मुझे भी बहुत प्रेरणा मिली। मुझे अनुभव हुआ कि हम सभी को अपनी रुचि के क्षेत्र से गहरा नाता रखना चाहिए। यदि हम भी पुस्तक-प्रेमी हैं तो वही हमारा वास्तविक संसार है। हम उसी दुनिया में जिएँ। उसी में हमें संतोष प्राप्त होगा।

प्रश्न 4 : 'किताबों वाले कमरे' में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?

उत्तर : लेखक ने पिछले चालीस-पचास वर्षों में हज़ारों किताबें अपनी निजी लाइब्रेरी में इकट्ठी की थीं। उसे इन किताबों से अत्यधिक प्रेम था। उसे लगता था कि बचपन में परी-कथाओं जैसे पढ़ते थे कि राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं, तोते में रहते हैं वैसे ही लेखक के प्राण भी उन किताबों में ही बसे थे; इसीलिए उसने अंत समय में किताबों वाले कमरे में ही रहना पसंद किया।

प्रश्न 5 : लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिका आती थीं?

उत्तर : लेखक के घर 'आर्यमित्र साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती' तथा 'गृहिणी' जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाएँ आती थीं। इनके अलावा 'बालसखा' और 'चमचम' बाल पत्रिकाएँ भी आती थीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 6 : लेखक की पारिवारिक स्थिति कैसी थी? उन्हें पढ़ने की आदत कैसे लगी?

उत्तर : उस समय आर्य समाज का सुधारवादी आंदोलन जोर पर था। लेखक के पिता आर्य समाज रानीमंडी के प्रधान थे। माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी। पिता की अच्छी खासी नौकरी थी, जिसमें उन्होंने खूब धन कमाया था, लेकिन लेखक के जन्म से पहले ही उन्होंने गांधीजी के आह्वान पर नौकरी छोड़ दी। परिवार आर्थिक संकटों से घिर गया। ऐसे समय में भी घर में नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। ये पत्रिकाएँ थीं–'आर्यमित्र साप्ताहिक', 'वेदादेम', 'सरस्वती', 'गृहिणी' तथा दो बाल पत्रिकाएँ 'बाल सखा' और 'चमचम'। इनके कारण लेखक को बचपन से ही पढ़ने की आदत लग गई थी।

प्रश्न 7 : लेखक की प्रारंभिक शिक्षा के विषय में बताइए।

उत्तर : लेखक की माँ स्कूली पढ़ाई पर ज़ोर देती थीं। उन्हें चिंता रहती थी कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता, अतः फेल न हो जाए। लेखक को शुरू में घर पर ही पढ़ाया गया तथा वह बुरे संस्कार ग्रहण न कर लें इसलिए कक्षा दो तक की पढ़ाई लेखक ने घर पर ही की थी। लेखक को स्कूल में तीसरी कक्षा में भर्ती कराया गया। उस दिन शाम को पिता जी उसे घुमाने ले गए और लोकनाथ की दुकान पर ताज़ा अनार का शरबत पिलाया। उन्होंने लेखक से पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ने का वायदा ले लिया। लेखक अच्छे नंबरों से पास होता चला गया। पाँचवी कक्षा में वह फर्स्ट आया तथा अंग्रेज़ी में सबसे अधिक नंबर लाने पर उसे अंग्रेजी की दो पुस्तकें इनाम में मिलीं।

प्रश्न 8 : स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेज़ी की दोनों पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नई दुनिया के द्वार खोल दिए?

उत्तर : पाँचवीं कक्षा में फर्स्ट आने पर लेखक को इनाम में दो अंग्रेज़ी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने उन्हें पक्षियों की बोलियों, उनकी जातियों और आदतों की जानकारी हो जाती है। दूसरी पुस्तक थी–'ट्रस्टी द रग' इसमें समुद्री कथाएँ थीं। इन किताबों ने लेखक के लिए नई दुनिया के द्वार खोल दिए। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। इससे लेखक का पढ़ने का शौक बढ़ता चला गया।

प्रश्न 9 : "आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है।" पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर : पिता के इस कथन से लेखक को पुस्तकें सहेजने की प्रेरणा मिली। इसी से आगे चलकर उसने अपना ऐसा निजी पुस्तकालय बनाया जिसमें हज़ारों पुस्तकें थीं।

प्रश्न 10 : लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : लेखक इंटरमीडिएट पास करके बी०ए० की पाठ्य-पुस्तकें लेने (सेकंड-हैंड) बुकशॉप पर गया हुआ था। वहीं उसने थियेटर पर 'देवदास' फ़िल्म लगी देखी। चूँकि उसकी माँ को सिनेमा देखना बिलकुल पसंद नहीं था, इसलिए उसने कभी सिनेमा का ज़िक्र नहीं किया। उस फ़िल्म का एक गाना–'दुःख के दिन अब बीतत नाहीं' वह अकसर गुनगुनाया करता।

माँ ने जब यह गीत सुना तो बेटे से कहा कि तुम निराश मत हो। दुःख के दिन अवश्य ही बीत जाएँगे। जब माँ को पता चला कि यह फ़िल्म का गाना है, तो उन्होंने कहा कि जाओ, फ़िल्म देख आओ और दो रुपये दे दिए। लेखक जब फ़िल्म देखने गया तो उससे पहले अपनी परिचित की किताब की दुकान पर चला गया, जहाँ उसे 'देवदास' नाम किताब दिखाई दी और उसने दस आने में 'देवदास' खरीदी और बाकी एक रुपया छः आना माँ को दे दिए। इस तरह लेखक द्वारा अपने पैसों से खरीदी गई यह पहली साहित्यिक पुस्तक थी।

प्रश्न 11 : लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

उत्तर : बचपन में लेखक के घर पर अनेक पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं। लेखक उन सभी को पढ़ता था। उनमें बाल-पत्रिकाएँ भी थीं। लेखक खाना-खाते समय भी पत्रिकाएँ पढ़ता रहता था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्ययन ने भी उसे पढ़ने का शौक लगाया। इस प्रकार लेखक को पुस्तकें पढ़ने का शौक घर से और बचपन में ही लग गया था। लेखक ने बारहवीं पास करने के बाद अपनी किताबें बेच दीं और उन पैसों से बी०ए० की पुरानी किताबें खरीदीं। किताबें खरीदने के बाद उसे दो रुपए बच गए। इन दो रुपयों में से उसने दस आने में 'देवदास' नाम की पुस्तक खरीदी। यह उसकी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी। यहीं से उसे किताबें सहेजने का शौक लग गया।

प्रश्न 12 : माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थीं?

उत्तर : लेखक सारा दिन पत्र-पत्रिकाएँ और कहानियों की किताबें पढ़ता रहता था। वह पाठ्यक्रम की पुस्तकें नहीं पढ़ता था। माँ को चिंता रहती थी कि इस प्रकार वह स्कूली पढ़ाई में पिछड़ जाएगा।

प्रश्न 13 : 'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ'–का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस कथन का आशय यह है कि लेखक का निजी पुस्तकालय बहुत समृद्ध है। उसमें हिंदी-अंग्रेज़ी के उपन्यास, नाटक, कथा संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण, इतिहास, कला, पुरातत्त्व, राजनीति की हज़ार से अधिक पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें लेखक को जीवनी-शक्ति प्रदान करती हैं। कबीर, सूर, तुलसी, रसखान, जायसी, प्रेमचंद, पंत, निराला, महादेवी आदि हिंदी के साहित्यकारों के अलावा संसार के सैकड़ों बड़े-बड़े लेखकों और कवियों की कृतियों के बीच लेखक स्वयं को कभी अकेला महसूस नहीं करता।

प्रश्न 14 : सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने तो लेखक को फ़िल्म देखने की आज्ञा दे दी, फिर भी वह बिना फ़िल्म देखे क्यों लौट आया? आपको लेखक की इस विशेषता से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : लेखक को बचपन से ही पुस्तक पढ़ने का बहुत चाव था। जब देवदास फ़िल्म आई तो बहुत लोगों ने उसे देखा। लेखक भी फ़िल्म देखना चाहता था किंतु माँ सिनेमा की घोर विरोधी थी। वह नहीं चाहती थी कि लेखक फ़िल्म देखे। परंतु बच्चे की जिद के आगे उसका कोमल हृदय पिघल गया। उसने लेखक को पिक्चर देखने की अनुमति दे दी। लेखक पिक्चर देखने चला भी गया। किंतु पिक्चर हॉल के बाहर ही उसे एक पुस्तक की दुकान पर 'देवदास' नामक पुस्तक दिख गई। उसे पुस्तक और कहानी पढ़ने का चाव तो था ही। अतः वह पुस्तक खरीदकर घर आ गया।

इस घटना को पढ़कर हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपना शौक सबसे ऊपर होता है। जब दो शौक आमने-सामने होते हैं तो बड़ा शौक जीत जाता है। दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि पढ़ना और पुस्तकें स्थायी मनोरंजन हैं। इनका महत्त्व तीन घंटे देखी गई फ़िल्म से अधिक होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 15 : मुहल्ले की लाइब्रेरी 'हरिभवन' का वर्णन करते हुए बताइए कि इस लाइब्रेरी के विषय में लेखक का क्या स्वप्न था?

उत्तर : लेखक के अपने ही मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी, जिसका नाम था 'हरि भवन'। बचपन में स्कूल से छुट्टी होते ही लेखक वहाँ जाकर जम जाता था। पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण घर की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। इसलिए लेखक लाइब्रेरी का चंदा देने में असमर्थ था। लेखक वहीं बैठकर किताबें निकलवाकर पढ़ता था। 'हरि भवन' में खूब उपन्यास थे। वहीं बैठकर लेखक का परिचय बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनंदिनी', 'कपाल कुण्डला' और आनंदमठ से टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', गार्गी की 'मदर' इत्यादि रोचक पुस्तकों से हुआ। लेखक लाइब्रेरी के खुलते ही वहाँ पहुँच जाता था और जब शुल्क जी (लाइब्रेरियन) कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बंद करना है, तब बड़ी अनिच्छा से लेखक वहाँ से उठता था। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि 'हरि भवन' बंद होने का समय आ गया और लेखक का कोई उपन्यास अधूरा रह गया, उस दिन उनके मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बनकर उपन्यास इश्यू करा लाता, या इस किताब को खरीद पाता। लेखक चाहता था कि ऐसी किताबों को खरीदकर बार-बार पढ़े, मगर पैसे की तंगी के कारण उसका स्वप्न पूरा न हो पाता था।

प्रश्न 16 : 'मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय' पाठ का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताइए कि इस पाठ से पाठकों को क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर : आत्मकथात्मक शैली में लिखे गए इस पाठ में लेखक ने पुस्तकों के प्रति अपना प्रेम और लगाव अभिव्यक्त किया है। बचपन में लेखक के घर पर इतनी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं कि बचपन से ही उन्हें पुस्तकें पढ़ने का शौक हो गया था। लेखक ने अपना निजी पुस्तकालय कब और कैसे बनाया इस बात को पढ़कर पाठकों को पुस्तकें पढ़ने और उन्हें सहेजकर रखने की प्रेरणा अवश्य मिलती है।

प्रश्न 17 : 'मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय' पाठ के द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर : प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने 'पुस्तकें हमारी मित्र' उक्ति को सत्य सावित करने का संदेश दिया है। पुस्तकें हमारी सच्ची साथी होती हैं। इनसे हमारे ज्ञान में वृद्धि के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। बच्चा जब छोटा होता हैं तो उसे मौखिक रूप से समझाना कठिन होता है, मगर पुस्तकों के माध्यम से हर बात समझ में आती है।

यहीं नहीं पुस्तकें समाज के विशेष विषयों पर जानकारी भी देती हैं। विज्ञान से संबंधित पुस्तकें वैज्ञानिक तर्कों की पुष्टि करती हैं। धार्मिक पुस्तकें धर्म का ज्ञान कराती हैं। महापुरुषों के जीवन से संबंधित पुस्तकें उनके जीवन की अनेक घटनाओं के विषय में जानकारी देती हैं। पुस्तकों में रुचि आने पर व्यक्ति फिर उन्हें छोड़ नहीं पाता। जैस कि प्रस्तुत पाठ में विदित है कि लेखक अधमरी हालत में अस्पताल से घर लाया जाता है, लेकिन फिर भी पुस्तकों वाले कमरे में ही रहना चाहता है। यद्यपि चिकित्सकों ने लेखक को पढ़ने-लिखने के लिए मना किया था, फिर भी वह किताबों वाले कमरे में रहकर उन्हें सिर्फ देखकर ही संतुष्ट होना चाहता था। इस प्रकार पुस्तकों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।

प्रश्न 18 : निजी पुस्तकालय के प्रति लेखक की भावना कैसी है?

उत्तर : आज लेखक के पुस्तकों के संकलन में विभिन्न विषयों पर अनेक लेखकों की हज़ारों पुस्तकें हैं। इनके बीच लेखक स्वयं को भरा-भरा-सा महसूस करता है। लेखक का ऑपरेशन सफ़ल होने के बाद उसे देखने आए मराठी के वरिष्ठ कवि विदा करदीकर ने सच कहा था कि "भारती, ये सैकड़ों महापुरुष जो पुस्तक-रूप में तुम्हारे चारों ओर विराजमान हैं, इन्हीं के आर्शीवाद से तुम बचे हो। इन्होंने तुम्हें पुनर्जीवन दिया है।" लेखक ने मन-ही-मन सबको प्रणाम किया, विदा को भी और उन महापुरुषों को भी।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–*

1. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे?
2. जीव-जंतु भी मनुष्य की तरह संवेदनशील होते हैं। 'गिल्लू' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।
3. लेखिका को पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम था। उनके घर में बहुत से पशु-पक्षी थे, लेकिन गिल्लू उनमें विशिष्ट था। कैसे?
4. "स्मृति पाठ बाल-मनोविज्ञान की परतों को खोलता है।" कैसे? सिद्ध कीजिए।
5. 'साँप ने फुसकार मारी या नहीं', ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'–यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?
6. लेखक ने बाल्यकाल में कौन-सी शरारत की, जो उसके लिए मुसीबत का कारण बन गई थी?
7. लेखक ने क्या निश्चय किया? उसे पूरा करने के लिए उसने क्या युक्ति अपनाई?
8. 'मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई'–लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?
9. त्रिपुरा 'बहुधार्मिक' समाज का उदाहरण कैसे बना?
10. लेखक ने त्रिपुरा में कहाँ और किस प्रकार शूटिंग की?
11. सन् 1989 में लेखक के साथ क्या घटना घटित हुई?
12. लेखक ने कुएँ में उतरने से पहले जो योजनाएँ बनाई थीं, वे कुएँ में उतरने के बाद 'आकाश-कुसुम' क्यों सिद्ध हुईं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in